

इकाई.-3 : शिक्षक की जटिल भूमिका

संरचना

- 3.1 परिचय
- 3.2 उद्देश्य
- 3.3 शिक्षक ज्ञानप्रदाता के रूप में
- 3.4 शिक्षक सुविधाप्रदाता के रूप में
- 3.5 शिक्षक परिवर्तन अभिकरण के रूप में
- 3.6 शिक्षक परामर्शदाता के रूप में
 - 3.6.1 अनुभव
 - 3.6.2 परामर्शदाता की मुख्य दक्षताएँ
 - 3.6.3 शिक्षक परामर्शदाता की विशेषताएँ
 - 3.6.4 परामर्शदाता के रूप में शिक्षक के कार्यों का विस्तार से वर्णन
- 3.7 चिंतनशील व्यवसायी के रूप में शिक्षक
 - 3.7.1 शिक्षकों की प्रतिबद्धता के क्षेत्र
 - 3.7.2 शिक्षकों की दक्षता के विभिन्न क्षेत्र
- 3.8 सारांश
- 3.9 प्रगति की जांच
- 3.10 सन्दर्भ सूचि

3.1 परिचय – वर्तमान युग में शिक्षा का स्वरूप बदल गया है। आज शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है और यह परिवर्तन निरंतर जारी है। चूँकि शिक्षा अधिगम प्रक्रिया में नए-नए प्रयोग हो रहे हैं अतएव इसके साथ ही शिक्षकों की भूमिका में भी बदलाव की जरूरत है। प्राचीन शिक्षकों की तुलना में आज शिक्षकों की भूमिका अधिक जटिल हो गयी है। आधुनिक शिक्षण तकनीक प्राचीन व्याख्यान से अलग है। वर्तमान में शिक्षण मात्र विषय पाठों का औपचारिक व्याख्यान नहीं है अपितु छात्रों के अधिगम अनुभवों का विस्तार है। शिक्षा कक्षा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि शैक्षिक वातावरण के बजाय, घर और समुदाय में और दुनिया भर में फैली सूचनाओं का आदान प्रदान है। छात्र तथ्यों के उपभोक्ता नहीं हैं। वे ज्ञान के सक्रिय सर्जक हैं। विद्यालय सिर्फ कंक्रीट संरचनाएँ नहीं हैं बल्कि वे आजीवन सीखने के केन्द्रों में का रूप ले रहे हैं। और, सबसे महत्वपूर्ण, शिक्षण हमारे देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक स्वास्थ्य के लिए पूरी तरह से महत्वपूर्ण, सबसे चुनौतीपूर्ण और सम्माननीय कैरियर विकल्पों में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है। परिस्थिति में आये इस प्रकार के परिवर्तन प्रभावी अध्यापकों की मांग

करते हैं। पारंपरिक रूप से जिसे प्रभावी माना जाता रहा है, आज की परिस्थितियों में वह शायद प्रासंगिक न हो। शिक्षक आज जिन परिस्थितियों का सामना कर रहा है वैसी स्थितियां पहले कम दिखाई देती थीं। अतः उन्हें उस संगठनात्मक सन्दर्भ में विभिन्न दक्षताओं का प्रभावी प्रचालन करना होता है, जो पिछले कुछ दशकों से भिन्न है। शिक्षा में परिवर्तन और सुधार के प्रस्तावों का स्वरूप चाहे कुछ भी हो, उनका कार्यान्वयन इस पर निर्भर करता है कि शिक्षक उन्हें किस रूप में देखते हैं। और कक्षा में उन्हें किस प्रकार रूपांतरित करते हैं। कई शिक्षक आज शिक्षण के कला और विज्ञान दोनों स्वरूपों को स्वीकार करते हैं व संस्थान द्वारा भी उन्हें नए तरीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका छात्र के सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, रुचियों, योग्यताओं को जानना व एक व्यक्ति के रूप में छात्र व अपनी अद्वितीय जरूरत को समझने में है। आज शिक्षा के क्षेत्र में इस तरह के एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के बीज बोये जा रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी, ज्ञान का विस्तार और बेहतर सीखने की राष्ट्रव्यापी मांग से प्रेरित होकर विद्यालय धीरे-धीरे निश्चित रूप से खुद को पुनर्गठन कर रहे हैं। साथ ही शिक्षकों के लिए भी आवश्यक हो गया है कि वे अपनी भूमिकाओं पर पुनर्विचार करें और अपने कौशलों को पुनः परिमार्जित करें। अतः शिक्षक भी बेहतर स्कूलों और छात्रों की सेवा करने के लिए खुद को और अपने शिक्षण के तरीके को बदल रहे हैं इनमें शिक्षकों के हजारों छात्रों-सहकर्मियों के साथ उनके रिश्तेय समुदाय के प्रति उनकी जिम्मेदारीय उपकरणों और तकनीकों का ज्ञान व अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों का ज्ञान पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का ज्ञान मानकों को तय करना, उन्हें स्थापित करना व उनका आकलन करना शिक्षक के रूप में व व्यावसायिक विकास के रूप में उनकी तैयारीय इत्यादि शामिल है। अतः वह शिक्षक के रूप में अनुदेशक व परामर्शदाता भी है, ज्ञान का प्रेषक भी है, और चिंतनशील पेशेवर होकर परिवर्तन का प्रतिनिधि भी है। शिक्षक का कार्य छात्रों में सकारात्मक सामाजिक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास को प्रेरित करना है। ताकि वे अपने निजी जीवन में अर्जित समझ, और ज्ञान का समुचित उपयोग कर बेहतर निर्णय ले सकें और समाज के लिए बहुमूल्य योगदान कर सकें।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि वर्तमान में शिक्षक को विभिन्न भूमिकाएं निभानी होती है। इन विभिन्न भूमिकाओं के बारे में हम विस्तार से चर्चा करेंगे

3.2 उद्देश्य— इस इकाई के अध्येयन के पश्चात विद्यार्थी

- शिक्षण की अवधारणा को परिभाषित कर सकेंगे
- सुविधाप्रदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका को समझ सकेंगे
- ज्ञान के प्रेषक के रूप में शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे.
- शिक्षक की परामर्शदाता के रूप में भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे.
- चिंतनशील व्यवसायी के रूप में शिक्षक के कार्यों से अवगत हो सकेंगे
- शिक्षक के समक्ष आई प्रत्येक स्थिति विशेष में उसकी भूमिका निर्दिष्ट कर सकेंगे.

3.3 शिक्षक ज्ञानप्रदाता के रूप में

शिक्षक का स्थान बड़े महत्व व गौरव का है। शिक्षा का वृहद उद्देश्य है बालक का सर्वांगीण विकास। इस महान लक्ष्य को शिक्षक के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। वस्तुस्थिति यह है कि शिक्षक आत्मज्ञान, आत्मनिर्देशन तथा ज्ञान का भंडार होता है। वह विभिन्न क्रियाकलापों व व्याख्यानों के द्वारा बालकों तक इस ज्ञान का हस्तांतरण करता है। वह अपने आदर्शमय जीवन से बालक को पवित्र बनाने के लिए ऐसा सुंदर वातावरण तैयार करता है, जिसमें रहते हुए छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके। दूसरे शब्दों में उसका कार्य बालकों की सहानुभूतिपूर्ण सहायता करके उनका उचित दिशा में मार्गदर्शन करना है और यह शिक्षा प्रक्रिया के द्वारा संभव होता है। शिक्षा प्रक्रिया का उद्देश्य बालक के ज्ञान की वृद्धि करना है। प्लेटो का तर्क है कि बिना बुद्धि के ज्ञान नहीं हो सकता और बिना ज्ञान के विवेक नहीं हो सकता और बिना विवेक के सत्य और असत्य तथा सही और गलत में भेद नहीं किया जा सकता। अतः शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की बुद्धि एवं विवेक शक्ति का विकास किया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षा प्रक्रिया ज्ञान की प्रक्रिया भी है और शिक्षक ज्ञानप्रदाता के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, क्योंकि शिक्षक को अपने विषय का पूर्ण स्वामित्व है। साथ ही वह शिक्षण वृत्ति के प्रति निष्ठावान है और इस व्यवसाय को वह अपनी स्वेच्छा से चयन करते हैं। आदर्शवाद के अनुसार बच्चों के पशुत्व से मनुष्यत्व से देवत्व की ओर ले जाने में शिक्षक की बड़ी अहम आवश्यकता होती है। प्लेटो के अनुसार, ज्ञान के भण्डार, दार्शनिक और अन्तर्दृष्टि प्राप्त व्यक्ति ही शिक्षक बनने के अधिकारी होते हैं। शिक्षक को विद्यालय तथा समाज में एक बौद्धिक भूमिका का निर्वहन करना होता है। शिक्षक की क्रियाओं का प्रारूप पाठ्यक्रम में दिया जाता है। शिक्षक उसी के अनुसार छात्रों को ज्ञान प्रदान करता है। अतः शिक्षक व छात्र में ज्ञाता और ज्ञेय का सम्बन्ध है। शिक्षक को ज्ञाता माना गया है और जो ज्ञान छात्र को देना है वह शिक्षक के अन्दर समाहित है। ज्ञाता और ज्ञेय (शिक्षक व छात्र) के मध्य अन्तःक्रिया के द्वारा शिक्षक यह ज्ञान बालकों को हस्तांतरित करता है। आज के संदर्भ में पाठ्यक्रम का शिक्षा प्रक्रिया में विशेष महत्व है। शिक्षक उसी के अनुसार क्रियाओं का आयोजन करता है। यहाँ पाठ्यक्रम का तात्पर्य है उस सम्पूर्ण छात्रों के अनुभव से संबंधित जो विद्यालय के अंतर्गत अनुभव किए जाते हैं।

ज्ञान प्रदाता के रूप में शिक्षक निम्न विधियों द्वारा छात्रों तक ज्ञान का हस्तांतरण करता है:—

- 1) **अनुदेशन** — यहाँ अनुदेशन का अर्थ होता है, शिक्षण के लिए शिक्षक द्वारा पाठ्यवस्तु के स्वरूप की व्यवस्था करना। हरबर्ट ने शिक्षा के अध्यापन कार्य में इसको आवश्यक माना है। शिक्षण की प्रक्रिया या सम्पादन अनुदेशन की सहायता से ही किया जाता है। शिक्षण द्वारा बालक के मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार की सूचनाओं तथा सामग्री से भरना

नहीं है। अपितु बालक को उसका आत्मसात् करना है, जिसे परिमाण भी कहते हैं। इसमें शिक्षक को सहानुभूतिपूर्ण अनुदेशन का प्रस्तुतीकरण करना आवश्यक है।

- 2) **सक्रिय शिक्षा विधि** – शिक्षक शिक्षा की प्रक्रियाओं द्वारा जो परिस्थितियां उत्पन्न करते हैं, उससे बालक के अनुभवों का विस्तार होता है और वे नए ज्ञान को अर्जित करते हैं। शिक्षा प्रक्रिया में छात्रों के अनुभवों का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रकृतिवादी भी इसके पक्षधर हैं और शिक्षा प्रक्रिया को अनुभव केंद्रित मानते हैं। इसे सक्रिय शिक्षा भी कहते हैं। शिक्षक को अपने अनुभवों को बालकों को नहीं देना है, अपितु ऐसी समुचित परिस्थितियां उत्पन्न करना है, जिनसे छात्रों को नए अनुभव प्राप्त हो, वही नए ज्ञान का स्वरूप होता है।
- 3) **व्याख्यान विधि** – ज्ञान की दृष्टि से हरबर्ट ने इसको अधिक महत्व दिया है। इसमें शिक्षक अधिक क्रियाशील रहता है तथा छात्र केवल स्रोतों के रूप में ही रहते हैं। इसमें पाठ्यवस्तु के पुष्टिकरण पर अधिक बल दिया जाता है। यह विधि शिक्षक केंद्रित तथा पाठ्यवस्तु केंद्रित होती है। इसके प्रयोग करने में कुछ सावधानियां भी रखी जाती हैं। शिक्षक द्वारा अच्छे व्याख्यान की प्रस्तुति के लिए एक वैध स्थान होता है, जिसमें वस्तुगत जानकारी के निश्चित प्रतिनिधान प्रस्तुत किए जाते हैं या जिसमें उपदेश, विश्वास या व्याख्याएं सलाह के रूप में बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से प्रस्तुत किए जाते हैं। इसमें शिक्षक को व्याख्यान तथ्यों या विचारों को स्वरलेखन यन्त्रपरक पुनरावृत्ति से बचना चाहिए तथा विद्यार्थियों के प्रश्न, अगुहिया, निर्णय को अधिक से अधिक अवसर प्रदान करना चाहिए। व्याख्यान विधि का उपयोग शिक्षक एक प्रविधि या सहायक प्रविधि के रूप में भी करते हैं। यह कला की सर्जनात्मक कृति के रूप में भी प्रयोग होती है। इस विधि द्वारा शिक्षक छात्रों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप अनुक्रिया करने को प्रेरित करता है। माध्यमिक विद्यालयों में ज्ञान हस्तांतरण के लिए व्याख्यान विधि का प्रयोग अधिक होता है।
- 4) **प्रश्नोत्तर विधि** – प्रश्नोत्तर विधि को सर्वप्रथम सुकरात ने दिया और इसके उपयोग में उनकी अवधारणा थी कि विश्व का समस्त ज्ञान बालक में निहित होता है, जो जन्म-मरण की प्रक्रिया में मुड़ जाता है। अतः शिक्षक द्वारा प्रश्नों की सहायता से उस ज्ञान को घोलने का प्रयास किया जाता है। उनका मानना है कि कोई भी ज्ञान बाहर

से नहीं दिया जा सकता है। अतः ज्ञानप्रदाता के रूप में शिक्षक इस विधि का बहुतायत उपयोग करते हैं व यह महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस विधि में छात्र और शिक्षक दोनों ही तत्पर तथा क्रियाशील रहते हैं। आज के प्रजातांत्रिक युग में इस विधि को विशेष महत्व दिया जाता है क्योंकि शिक्षा को एक अन्तः प्रक्रिया माना जाता है।

शिक्षक ज्ञान प्रदाता के रूप में ज्ञान का आदान-प्रदान करता है। अतः यह विधि इसमें विशेष भूमिका निभाती है। इस विधि के उपयोग से विचार-विमर्श करना संभव है। जब अध्ययन विषय में चिंतन सम्बद्ध होता है और तत्परता से इस प्रकार के अध्ययन के लिए अपने को समर्पित करता है। चर्चा को गति देने में शिक्षक विचारोत्तेजक प्रश्नों के सजग प्रयोग के द्वारा अनेक बातें कर सकता है। वह अध्ययनगत विषयवस्तु को महत्ता और अर्थ प्रदान कर सकता है। शिक्षक ऐसे विकल्पों द्वारा विद्यार्थियों को उलझन में डाल सकता है, जो उसके निर्णयों को आमंत्रण दें। शिक्षक उसके समझ विचारों के विकल्प प्रस्तुत कर सकता है, जो शायद अन्यथा उसे न सूझें और वह विद्यार्थी के सम्मुख विचारों और मतों की विशालता के कुछ रूपों को व्यक्त कर सकता है, जिनका सम्मान वह तब करेगा, जब वह स्वयं स्वेच्छा से जगत में प्रवेश करेगा। प्रश्नोत्तर विधि के द्वारा ऐसी परिस्थितियों का सृजन किया जाता है, जिसमें छात्र और शिक्षक दोनों ही क्रियाशील होते हैं और इसमें विद्यार्थी स्वयं भी अपनी क्षमताओं के अनुसार अपने विचार को रखते हैं और शिक्षक से प्रश्न भी करते हैं। योग्य शिक्षक विद्यार्थियों के प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करते हैं तथा अपनी शिक्षा पाठ्यवस्तु से संबंध स्थापित करते हैं। ज्ञानप्रदाता के रूप में कभी-कभी शिक्षक स्वयं प्रश्न करते हैं और उसके संबंध में अपने विचारों को प्रस्तुत करते हैं। यह विचार या प्रश्न दीक्षा के साधन होते हैं। इनका प्रयोग शिक्षक उस समय करता है, जब छात्रों के विचार अधिक उग्र होने लगते हैं।

ज्ञान प्रदाता के रूप में शिक्षक को यह सावधानी बरतनी होती है कि ज्ञान का आदान-प्रदान उस स्तर तक न पहुँचे, जहाँ छात्र समझने में अपने को असहाय व असमर्थ समझे। हार्न बड़ी तत्परता से स्वीकार करते हैं कि परिचर्चा यदि योग्य शिक्षक के हाथ में नहीं है, तो शिक्षण की प्रक्रिया व्यर्थ होगी। अतः ज्ञानप्रदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है और इसका उचित निर्वहन एक कुशल शिक्षक ही कर सकता है।

5 निगमन विधि



इस विधि की अवधारणा यह है कि शिक्षक यह मानकर इसका उपयोग करता है कि छात्र सामान्य नियम, अधिनियम, सामान्यीकरण का ज्ञान रखता है और उनका उपयोग विशिष्ट रूप में करना सिखाता है। जिससे विशिष्ट समस्या का सामान्य नियम के उपयोग से समाधान कर सकें।

6 आगमन विधि



आगमन शिक्षण में तार्किक चिंतन द्वारा तथ्यों के अंतर्गत संबंधों को ज्ञात करके उनके वर्गीकरण से सामान्यीकरण करते हैं। जिससे उन संबंधों की व्याख्या होती है। आगमन चिंतन से शिक्षक छात्रों को सिद्धांतों तथा अधिनियमों का उपयोग सिखाता है।

3.3 अधिगम क्रियाकलाप

ज्ञानप्रदाता के रूप में अपने शिक्षक के कुछ कार्यकलापों को सूचीबद्ध कीजिये.

बोध प्रश्न

टिपण्णी

क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[I] अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये.

1- छात्रों में ज्ञान के समुचित हस्तांतरण के लिए शिक्षक किन विधियों का प्रयोग कर सकता है?

[illegible]

3.4 शिक्षक सुविधाप्रदाता के रूप में

सुविधाप्रदाता के रूप में शिक्षक एक समग्र भूमिका निभाता है जो शिक्षक की क्षमताओं और सामान्य ज्ञान के कई पहलुओं का आह्वान करती है। इसे उचित रूप से परिभाषित करना कठिन है। यह शिक्षक का एक और अधिक जटिल दृश्य को विकसित करने में सबसे महत्वपूर्ण अग्रिमों में से एक है। जो शिक्षक छात्रों में व्यक्तिगत विकास को प्रेरित करते हैं वे बेहद समर्पित, असाधारण, योग्य, और अद्वितीय हैं। इसके लिए उनमें एक आत्म आश्वासन की आवश्यकता है। शिक्षक छात्र की आंतरिक शक्तियों के विकास में मदद करता है जिनसे छात्र स्वयं भी परिचित नहीं है। यह वही अपरिभाष्य अंतर है जो प्रशिक्षण और शिक्षा, उपदेश और शिक्षण के मध्य है। जब शिक्षक सुविधाप्रदाता के रूप में होता है तो कक्षा में छात्रों के व्यक्तित्व विकास में उन्नयन वृद्धि होती है। सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक केंद्रीय भूमिका में होते हैं। वर्तमान युग में शिक्षा प्रक्रिया में सुचना और तकनीक का आगमन हो गया है। आईसीटी का उपयोग कर रहे शिक्षक के सुविधाप्रदाता की भूमिका में बदलाव होने से शिक्षकों द्वारा कक्षा में नेता के रूप में सेवा करने की जरूरत समाप्त नहीं हो जाती। शिक्षक के पारम्परिक नेतृत्व

कौशल और उसका प्रयोग अभी भी महत्वपूर्ण हैं। विशेष रूप से उनके लिए, जो पाठ योजना, तैयारी तथा उनके फॉलो-अप में शामिल हों। इसमें पाठ की योजना बनाना महत्वपूर्ण है अनुसंधान से पता चलता है कि जहां योजना अनुचित रूप से बनाई गई हो वहां छात्र का काम अक्सर विकेंद्रित होता है और इससे लक्ष्य प्राप्ति में कमी आ सकती है।

सुविधाप्रदाता की भूमिका में शिक्षक का कार्य छात्रों को मार्गदर्शन देना है। शिक्षक की विशिष्ट भूमिका है

- छात्रों को सूचित करने के लिए, प्रोत्साहित करने के लिए
- एक लक्ष्य के रूप में समस्या को पहचानने में
- खुद सीखने में उन्हें सुविधा प्रदान करने में
- उचित विश्लेषण निरीक्षण करने में मार्गदर्शन देने में
- स्वयं अपने लक्ष्य साकार करने में
- स्वयं निर्णय लेने में।

अतः एक कुशल सुविधाप्रदाता के रूप में शिक्षक कक्षा में उचित वातावरण का निर्माण करे। तदापि विषय वस्तु के उचित अधिगम के लिए छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करे। व उचित विश्लेषण निरीक्षण करने में मार्गदर्शन देने में समर्थ हो ताकि छात्र स्वयं उत्तर खोजने के लिए प्रेरित हों व अन्तत उत्तर तक पहुँच सके। और इस भूमिका में शिक्षक को सरलीकरण दृष्टिकोण रखना चाहिए। व्याख्यान देने और उपदेश से बचना चाहिए। अधिक विश्वास और प्रबल को चर्चा का नियंत्रण या संचालन की अनुमति न दें। पूर्व परिदृश्य में शिक्षार्थी एक निष्क्रिय भूमिका निभाता है अपितु इस परिदृश्य में शिक्षार्थी सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाता है इससे शिक्षक की बदलती भूमिका भी परिलक्षित होती सीखने के लिए रचनावादी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जिसमें 'शिक्षक द्वारा ज्ञान देने' के बनिस्पत 'छात्रों द्वारा स्वयं ज्ञान के निर्माण पर जोर दिया जाता है। शिक्षक द्वारा छात्रों के साथ छोटे समूहों के सत्र में एक अनौपचारिक तरीके से संवाद करने की क्षमता की जरूरत है। इसमें खुले रूप में विचार विमर्श को प्रोत्साहित किया जाता है। सुविधाप्रदाता के रूप में शिक्षक में सिर्फ विषयवस्तु का ज्ञान पर्याप्त नहीं होता अपितु कई कौशलों की आवश्यकता होती है।

सुविधाप्रदाता की भूमिका में शिक्षक में निम्न विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं

- प्रभावी श्रोता
- उदारता
- व्यापक समझ
- छात्रों के व्यक्तित्व के प्रतिसम्मान
- बुद्धिमत्ता
- पारस्परिक संचार कौशल में निपुणता

1) प्रभावी श्रोता

सुनना एक जटिल संवाद प्रक्रिया है, जो ध्वनि तरंगों को सुन लेने मात्र से अधिक है। अतः शिक्षक को अधिगम प्रक्रिया के दौरान प्रभावी श्रोता के रूप में प्रस्तुत होना चाहिए। शिक्षक

द्वारा छात्रों तक संदेश का सही प्रतिपादन, एवं छात्रों द्वारा शिक्षक तक संदेश का सही प्रतिपादन, शिक्षक द्वारा संदेश को याद रखे जाने और उस पर छात्र की प्रतिक्रिया आदि कुछ बातें अत्यंत महत्वपूर्ण हैं

2) उदारता

शिक्षकों को छात्रों के प्रति उदारतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए जिससे वे अधिगम प्रक्रिया में अधिक सहभागिता कर सकें.

3) व्यापक समझ

शिक्षक छात्र से समानुभूति का दृष्टिकोण रखे. प्राथमिक रूप से स्वयं को समझने के लिए अधिगम में छात्र को शामिल करें तत्पश्चात छात्र दूसरों को समझने की ओर कदम अग्रसर करेगा. रक्षात्मक रुख के लिए छात्र द्वारा क्या व्यक्त किया जा रहा है इस पर भी ध्यान देना चाहिए.

4) छात्रों के व्यक्तित्व के प्रतिसम्मान

छात्रों के अनुभवों को महत्त्व प्रदान किया जाना चाहिए. कक्षा में इस प्रकार की गतिविधियों पर जोर दिया जाना चाहिए जिससे छात्रों में एक दुसरे के प्रति सम्मान की भावना विकसित हो. शिक्षक का दृष्टिकोण सकारात्मक होना चाहिए.

5) बुद्धिमत्ता

सुविधाप्रदानकर्ता के रूप में भी शिक्षक के लिए आवश्यक है कि उसे विषयवस्तु का व्यापक ज्ञान हो. जब व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि साझा करने से, सीखने की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए जानता है तो छात्र अन्वेषण को अधिक बल मिलता है. एक क्षेत्र में मौलिक विचारों की महारथ, सामान्य सिद्धांतों का ज्ञान , यह भी सीखने और जांच की ओर एक दृष्टिकोण का विकास करते हैं. जो समस्याओं को हल करने में सहायक होता है.

6) पारस्परिक संचार कौशल में निपुणता

दूसरों में विश्वास करने के लिए, छात्रों को जिम्मेदारी देने के लिए, और उसके बाद छात्रों को पूरी तरह जवाबदेह बन जाने के प्रति विश्वास और आत्म नियंत्रण के लिए शिक्षक के लिए पारस्परिक संचार कौशल में निपुणता आवश्यक है.

3.4 अधिगम क्रियाकलाप

1. अपने निकट स्थित किसी विद्यालय में जाकर वहां के शिक्षक के साथ विचार विश्लेषण कीजिये. व सुविधाप्रदाता के रूप में उनके द्वारा अपनाई जाने वाली विधियों से सम्बंधित जानकारी प्राप्त कीजिये.
2. पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में सुविधाप्रदाता के रूप में शिक्षक के कार्यकलापों को सूचीबद्ध कीजिये.

बोध प्रश्न

टिपणी

क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[1] अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये.

3. परियोजना कार्य में छात्रों के मार्गदर्शन के दौरान शिक्षक किस भूमिका का निर्वहन करता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4. सुविधाप्रदाता की भूमिका में शिक्षक में किन विशेषताओं की आवश्यकता होती है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 शिक्षक परिवर्तन अभिकरण के रूप में

शिक्षक और सामाजिक परिवर्तन में घनिष्ठ संबंध है। सामाजिक परिवर्तन में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज के इस संक्रमणकाल में शिक्षक ही लोगों के अंदर व्याप्त अज्ञान के अंधकार को दूर कर उन्हें प्रगति पथ की नई राह दिखा सकता है। वही परिवर्तन के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करके नए परिवर्तनों में आस्था पैदा कर सकता है और नये परिवर्तनों को लाने में समाज का नेतृत्व भी कर सकता है। सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से शिक्षक एक मित्र, पथ-प्रदर्शक और दार्शनिक के रूप में बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति सिद्ध हो सकता है। शिक्षक सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कोई भी शिक्षक सामाजिक

परिवर्तन को लाने में उसी समय अपना योगदान दे सकता है, जब उसको समाज की आशाओं एवं मांगों के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन के प्रकारों तथा दिशाओं का भी पूरा-पूरा ज्ञान हो। वस्तुस्थिति यह है कि सामाजिक परिवर्तन अनेक प्रकार के होते हैं – (1) विकासात्मक, (2) लहरदार, (3) चक्रिय क्रम। ऐसे ही सामाजिक परिवर्तन की दिशाएँ भी विभिन्न हैं, उनमें से मुख्य दिशाएँ हैं – (अ) समतल, (ब) असमतल। शिक्षक को सामाजिक परिवर्तन के उक्त सभी प्रकारों एवं दिशाओं को दृष्टि में रखते हुए इसे ऐसी दिशा में मोड़ना चाहिए, जो समस्त समाज के लिए कल्याणकारी हो और उसे जनता प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर ले। शिक्षक को इस बात का पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए कि सामाजिक परिवर्तन सदैव समतल ही नहीं होते। उसे इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि जब किसी अमुक समाज की संस्कृति दूसरे समाज के लिए लाभप्रद नहीं होती तो ऐसी संस्कृति द्वारा लाये हुए परिवर्तन तथा शिक्षक भी शिक्षा योजना दोनों को असमतल की संज्ञा दी जाएगी। दूसरे शब्दों में जब सामाजिक परिवर्तन असमतल होता है तो शैक्षिक परिवर्तन भी असमतल ही होता है। अतः शिक्षक को ऐसे अहितकर परिवर्तनों से समाज की रक्षा करनी चाहिए।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि शिक्षकों ने आरंभ से ही सामाजिक परिवर्तन लाने में पूरा सहयोग दिया है। यदि प्राचीन भारत पर दृष्टिपात किया जाए तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि जब भी शिक्षकों ने सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव किया तब ही उन्होंने अपने आश्रमों के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था में आश्चर्यजनक परिवर्तन किये। शिक्षकों के महत्व एवं उनकी सामाजिक सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए आज भी उन्हें समाज अथवा राष्ट्र का निर्माता कहा जाता है, पर खेद का विषय आज शिक्षक को वह स्थान नहीं दिया जाता। यदि शिक्षक अपने थोपे हुए मान व प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करना चाहता है तो उसे बदलते हुए समाज तथा उसकी बदलती हुई आवश्यकताओं में पूरी तरह समझकर सामाजिक परिवर्तन में आवश्यक योगदान देना चाहिए। कारण यह भी है कि शिक्षण कार्य भी अन्य व्यवसायों की भांति एक व्यवसाय बन गया है, जिसे केवल वही व्यक्ति अपना सकते हैं, जिन्हें अपने विषय का पूरा ज्ञान हो तथा जिन्होंने प्रशिक्षण भी प्राप्त किया हो। अतः आज के जनतांत्रिक युग में जहाँ एक ओर लोकप्रिय शिक्षा की मांग बढ़ती जा रही है, वहीं दूसरी ओर शिक्षकों की आर्थिक दशा में समाज तथा सरकार ने आवश्यक सुधार नहीं किया है। चूंकि प्रत्येक सामाजिक परिवर्तन प्रयोग द्वारा ही लाया जा सकता है और प्रयोग के लिए धन की आवश्यकता होती है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षकों को समाज में महत्वपूर्ण स्थान देते हुए उनकी आर्थिक दशा में आवश्यक सुधार किया जाए। तब ही उनसे आशा की जा सकती है कि वे सामाजिक परिवर्तन के प्रभावपूर्ण प्रतिनिधि के रूप में प्रशंसनीय कार्य कर सकेंगे।

सामाजिक परिवर्तन के कारक के रूप में निम्नलिखित बातें दृष्टव्य है –

- शिक्षक को सामाजिक परिवर्तन को सुनियोजित दिशा व गति प्रदान करनी चाहिए।
- शिक्षक को प्रजातांत्रिक जीवन मार्ग अपनाना चाहिए।
- शिक्षक को व्यवहार निष्पक्ष और सभी के लिए समान होना चाहिए।
- शिक्षक को नवीन दृष्टिकोण एवं मूल्यों के लिए मनोवैज्ञानिक वातावरण तैयार करना चाहिए।
- शिक्षक को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से युक्त होना चाहिए।
- शिक्षक को राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय जानकारी से अवगत होना चाहिए।
- शिक्षक को उदार व धर्मनिरपेक्ष मूल्यों से सम्पन्न होना चाहिए।
- शिक्षक को समाज में व्याप्त संकीर्णता और पिछड़ेपन को दूर करके आदर्शों व मूल्यों की प्रतिष्ठा करनी चाहिए।
- शिक्षक को बालक की सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों के कारण उनमें उच्चता और भिन्नता की भावना को पनपने नहीं देना चाहिए।
- शिक्षक को समाज को वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक प्रगति के विकास में सक्रिय योगदान देना चाहिए।
- शिक्षक को लोगों के मन से सांस्कृतिक जड़ता की भावना को दूर करके उन्हें नवीन परिवर्तन के लिए तैयार करना चाहिए।
- शिक्षक को बुद्धिजीवी होता है, उसे ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों की व्यापक जानकारी होती है। अपने इस उच्च ज्ञान के आधार पर उसे नए परिवर्तनों के लिए भूमिका तैयार करनी चाहिए। उन्हें सही ढंग से प्रारंभ करना चाहिए एवं उनको नियंत्रित करना चाहिए, जिससे ये परिवर्तन सही दिशा की ओर हो सकें।
- शिक्षक को समाज में होने वाले नवीन परिवर्तनों की जानकारी लोगों को देनी चाहिए, जिससे सभी लोग उन परिवर्तनों को लाने में सहयोग करें।
- शिक्षक को बालकों के समक्ष अपने को आदर्श रूप में प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे विद्यार्थी उसका अनुकरण करके अपने विचारों को प्रगतिशील बना सकें।
- शिक्षक को पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों को महत्व देना चाहिए, जिससे समाज वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टि से विकास कर सकें।
- शिक्षक को बालकों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना चाहिए, जिससे वे नए समाज की संरचना में अपना योगदान दे सकें।
- शिक्षक को समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और समस्याओं से अवगत होना चाहिए तथा इनका समाधान करके समाज में प्रगतिशील मूल्य स्थापित करने चाहिए।

- शिक्षक को सामान्य परिवर्तन लाने के लिए कभी-कभी बालकों की कक्षा को सीमा के बाहर भी शिक्षा कार्य करना चाहिए और विविध प्रकार की जानकारी प्रदान करनी चाहिए।
- शिक्षक को समाज की गतिविधियों एवं क्रियाकलापों का पूर्ण परिज्ञान होना चाहिए, जिससे वह समाज को विचार और दिशा में नेतृत्व प्रदान कर सके।

3.5 अधिगम क्रियाकलाप

ऐसे कुछ शिक्षकों के नामों को सूचीबद्ध कीजिये जिन्होंने सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है

बोध प्रश्न

टिपण्णी क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[1) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये.

5. सामाजिक परिवर्तन कितने प्रकार के होते हैं ?

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

3.6 शिक्षक परामर्शदाता के रूप में

परामर्श की प्रक्रिया में उपबोधक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान होता है। विशिष्ट एवं सुनिश्चित परिस्थितियों में ही परामर्श प्रदान किया जाता है तथा उसके लिए परामर्श देने वाले व्यक्ति में विभिन्न प्रकार की योग्यताओं एवं कौशलों का होना आवश्यक होता है। परामर्शदाता परामर्शी की समस्याओं या कठिनाईयों को ध्यान में रखते हुए उसकी अनुभूतियों, उसके संज्ञान, व्यवहार तथा अन्तर्व्यक्तिक संबंधों में हस्तक्षेप करके समस्याओं के समाधान तथा लक्ष्य प्राप्ति में यथासंभव सहयोग करता है। परामर्श सेवा की प्रक्रिया को संचालित करने वाले व्यक्ति को परामर्शदाता कहा जाता है। इन आवश्यक दक्षताओं के विकास के लिए विशेष शिक्षण-प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। परामर्शदाता से आशा की जाती है कि उसे मनोविज्ञान के अतिरिक्त समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, समाज कार्य का भी आधारभूत ज्ञान होना चाहिए। इन मापदंडों पर शिक्षक खरे उतरते हैं। क्योंकि वे उपर्युक्त कौशलों में निपुण होते हैं। अतः लीफिवर के अनुसार – “एक शिक्षक परामर्शदाता वह है, जिसे परामर्श कार्य के लिए कम से कम एक कक्षा में कार्य से मुक्त किया जाए। लेकिन जो अपने पूरे समय के आधे समय का उपयोग विद्यार्थी के लिए न करे।”

परामर्श की परिभाषा

गुड ने 1945 में अपने शैक्षिक शब्दकोष में परामर्श के अर्थ के अंतर्गत ज्ञानात्मक सामग्री, तत्काल निर्णय लेने और बाहरी साधनों के प्रयोग पर जोर देते हुए लिखा – “परामर्श अकेले और व्यक्तिगत रूप से शैक्षिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत समस्याओं में सहायता प्रदान करना है, जिससे सभी संबंधित तथ्यों का अध्ययन और विश्लेषण किया जाता है और इन समस्याओं का समाधान प्रायः विशेषज्ञों, स्कूलों, सामुदायिक साधनों

और व्यक्तिगत साक्षात्कारों की सहायता से किया जाता है, जिसमें परामर्श प्राप्तकर्ता को अपने निर्णय स्वयं लेना सिखाया जाता है।”

3.6.1 अनुभव

उचित परामर्श प्रदान करने के लिए परामर्शदाता के लिए आवश्यक है कि उसे गहन अनुभव प्राप्त हो क्योंकि कुछ कार्य गहन अनुभव के अभाव में ठीक से नहीं किए जा सकते हैं। स्मिथ महोदय ने परामर्शदाता में निम्नांकित अनुभवों का होना परमावश्यक बताया है :—

- 1) विद्यार्थियों की समस्या को समझना
- 2) समस्या समाधान में सहायता करना
- 3) विद्यार्थी के साथ मधुर संबंध बनाना
- 4) प्रत्येक प्रकार की सूचनाओं की व्याख्या करने में निपुणता
- 5) सामाजिक साधनों के प्रयोग में दक्ष होना
- 6) व्यवसाय दिलवाना तथा उचित कार्यवाही में निपुण
- 7) परामर्श सेवाओं का मूल्यांकन करने की योग्यता रखना।

3.6.2 परामर्शदाता की मुख्य दक्षताएँ

एक परामर्शदाता का कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक होता है। परामर्शदाता के रूप में शिक्षक में कई दक्षताओं में निपुणता होनी चाहिए। परामर्श सेवा के प्रति पर्याप्त रुचि, बौद्धिक क्षमताएँ, सामाजिक सम्बंधों की परिपक्वता, अन्य व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता, शांतचित्त प्रवृत्ति आदि कौशल भी होना चाहिए। शिक्षक का कार्य क्षेत्र में अनुभव उसकी सेवा की प्रमाणिकता होती है। शिक्षक को परामर्शदाता के रूप में शिक्षण—प्रशिक्षण निम्न तीन बिंदुओं में बताया जा सकता है:—

- अ) सामान्य/आधारभूत शैक्षणिक योग्यता (न्यूनतम मनोविज्ञान स्नातक)
- ब) परामर्श के क्षेत्र में शिक्षण—प्रशिक्षण
- स) दक्षता का विकास एवं संदर्भित विषय में प्रशिक्षण

आंतरिक दक्षताएँ

- (1) अवलोकन, (2) सुनना, (3) संवेदना, (4) तटस्थ मूल्यांकन और निर्णय लेना, (5) विभेदन, (6) आत्म प्रत्यावर्तन, (7) विद्यार्थी के अनुभव का ज्ञान, (8) चुनौती देने की अभिवृत्ति का आत्मबोध, (9) सिद्धांतों की जांच परख करना, (10) प्रत्यावर्तन एवं अभिलेखन

बाहरी दक्षताएँ

(1) ध्यान देना, (2) अभिवादन, (3) सक्रिय श्रवण (अनुभूतियाँ अभिव्यक्त करना, संक्षेप करना, व्याख्या करना), (4) प्रश्न पूछना, (5) उद्देश्य व वरीयता का वर्णन करना, (6) परामर्श की भूमिका को स्पष्ट करना, (7) प्रदत्त अभिलेखन की ऑडियो-वीडियो तकनीक में दक्षता, (8) अभिसरण (फोकसिंग), (9) सार संक्षेपण, (10) मूर्त उदाहरण नियोजित करना, (11) गहन परानुभूति, (12) चुनौती देना व ग्रहण करना, (13) उपयुक्त आत्म अभिव्यक्ति, (14) तात्कालिकता एवं तत्परता

द्वितीय श्रेणी की दक्षताएँ – मूल रूप से निम्नलिखित –

(1) प्रश्न पूछना (विद्यार्थी से) तथा प्रश्न पूछने तथा उसके अभिलेखन का कारण परामर्शी विद्यार्थी को स्पष्ट करना। (2) परामर्श उद्देश्य का वर्णन करना, (3) वरीयता का वर्णन करना, (4) परामर्शी विद्यार्थी को परानुभूति, सम्मान व सुसंगत रूप से दृढ़ इंकार करना, (5) ठीक ढंग से टेप रिकार्डिंग करना, (6) कार्य में संपूर्ण ऊर्जा के साथ बाधक तत्वों (उदा. – चिंता व नापसंद आदि) से मुक्त होकर कार्य करना, (7) अवलोकन करना, (8) ध्यानपूर्वक करना, (9) सहजीकरण बाह्य दक्षता, जैसे परानुभूति का संप्रेषण, प्रश्न पूछना तथा प्रतिक्रिया करना।

3.6.3 शिक्षक परामर्शदाता की विशेषताएँ

1. **गहन विशिष्ट जानकारी** – एक सरल परामर्शदाता को अपने आस-पासके सांस्कृतिक एवं आर्थिक जगत का सामान्य ज्ञान पर्याप्त मात्रा में अवश्य ही होना चाहिए। एक सफल परामर्शदाता से व्यावसायिक जानकारी की भी अपेक्षा की जाती है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि परामर्शदाता कोई विश्वकोष स्तर का हो लेकिन उसका सामान्य ज्ञान पर्याप्त स्तर पर आवश्यक है।
2. **विशेष वैयक्तिक गुण** – वृहत् सामान्य ज्ञान के अतिरिक्त परामर्शदाता में कुछ विशेष वैयक्तिक गुण भी होने चाहिए। यथा उसमें सहानुभूति, सहिष्णुता, वस्तुगतता, सन्तुलित व्यक्तित्व, विवेकशीलता, उत्साही तथा दूसरों की कमजोरियों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। एक ही वाक्य में कहा जाये तो प्रभावशाली परामर्शदाता एक असाधारण व्यक्ति होता है। उसका व्यवहार बहुत ही सरल व मिलसार होना चाहिए।
3. **विशेष कौशल** – परामर्शदाता को परामर्श में प्रयुक्त आवश्यक तकनीकों को उपयोग करना भी आना चाहिए। जैसे परीक्षण, साक्षात्कार तथा नियोजन। परामर्शदाता को

मापन परीक्षणों की भी जानकारी अवश्य ही होनी चाहिए, परामर्शदाता को जानकारी होनी चाहिए कि किस वांछनीय योग्यता से किस प्रकार से भविष्य बनाया जा सकता है।

4. **व्यक्ति की समायोजन क्षमता में विश्वास** – चिकित्सात्मक परामर्श परामर्शी या कलाइंट की समायोजन शक्ति पर निर्भर करता है। प्रत्येक व्यक्ति में अनुकूलन तथा पुनर्समायोजन की पर्याप्त क्षमता विद्यमान होती है। परामर्शी की इस सामर्थ्य का उपयोग सार्थक व प्रभावशाली परामर्श सेवा के लिए प्रत्येक परामर्शदाता करने को प्रयत्नशील रहता है।
5. **परामर्शी की वैयक्तिक स्वायत्ता के प्रति आदर की भावना** – परामर्शदाता को यह समझना चाहिए कि परामर्शी के अपने सम्बन्ध में उसको स्वयं निर्णय लेने का अधिकार है इतना ही नहीं वह परामर्शदाता से सहायता लेने से भी इन्कार कर सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि परामर्शी परामर्शदाता की सहायता को अपने विवेक के अनुरूप उपयोग करें। वह अपने आपके प्रति पूर्ण जिम्मेदार है और उसे अपनी इस जिम्मेदारी का एहसास परामर्श-सेवा के दौरान और अधिक बढ़ जाना चाहिए।
6. **सम्माननीय व्यक्ति के लिए आदर** – परामर्शदाता व्यक्ति को उसके पूर्ण परिवेश के साथ स्वीकार करता है। उसे दी जाने वाली परामर्श सेवा उसके जीवन के किसी विशेष मात्र से ही सम्बन्ध नहीं रखती बल्कि परामर्शदाता का ध्यान व्यक्ति पर केन्द्रित रहता है। इस समय परामर्शदाता का ध्यान व्यक्ति के विधेयात्मक तथा नकारात्मक प्रयत्नों, उसकी भावनाओं, आशाओं तथा चिन्ताओं आदि पर सम्पूर्णता के साथ रहता है।
7. **परामर्शी की स्वयं के समझने तथा स्वीकार करने में सहायता करना** – परामर्श के श्रेष्ठ स्वरूप में परामर्शी को अपनी समस्या पर केन्द्रित होकर उसे समाधान में प्रयत्नशील होना चाहिए। परामर्शी वही सीखेगा जिसे वह सीखना चाहेगा। तभी वह उसे अपने जीवन का अंश बना सकेगा। जब परामर्शी को यह महसूस होने लगता है कि परामर्शदाता उसके व्यक्तित्व को आदर तथा महत्व प्रदान कर रहा है तभी वह अपने अपेक्षाकृत गहरे व गोपनीय भावों (गोपनीय तथ्यों) को व्यक्त करने लगता है। अतः उसका संकोच दूर हो जाता है।
8. **व्यवहार में नैतिकता एवं लचीलापन** – परामर्शदाता के व्यवहार में लचीलापन के साथ-साथ नैतिक गुणों का समावेश भी होना चाहिए, क्योंकि परामर्श क्षेत्र में अधिक सम्भावना होती है कि परामर्शदाता को परामर्शी की गोपनीयता से भी अवगत होना होता है। जब तक परामर्शी व्यक्ति को परामर्शदाता पर पूर्ण विश्वास नहीं होगा तब तक वह

अपने भाव तथा विचारों को परामर्शदाता के सामने निःसंकोच खुलकर नहीं व्यक्त करेगा। परामर्शदाता को रूढ़िवादी या अधिक दृढ़ स्वभाव का नहीं होना चाहिए। इससे उसकी परामर्श-सेवा की सार्थकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

9. **समझ और बौद्धिक योग्यता** – परामर्शदाता में भावनात्मक समझ तथा वैचारिक समझ भी होनी चाहिए। परामर्शदाता का संचार स्वरूप ऐसा होना चाहिए कि वह अपने आपको परामर्शी के साथ भावनात्मक एवं वैचारिक दोनों स्तरों पर जोड़ सकें। परामर्शदाता को बौद्धिक रूप से भी कुसाग्र होना अति आवश्यक होता है। उसे प्रत्येक घटना या परिस्थिति के साथ अपना अनुभव जोड़ने की कुशलता भी होनी चाहिए। परामर्शदाता का चिन्तन व्यवस्थित एवं तार्किक रूप से उत्तम स्तरीय होना चाहिए।

3.6.4 परामर्शदाता के रूप में शिक्षक के कार्यों का विस्तार से वर्णन

1. **सूचनाओं का इकट्ठा करना और परीक्षण करना** – शिक्षक विद्यार्थी के वातावरण से संबंधी सभी प्रकार की सूचनाओं को एकत्र करता है। इस कार्य में शिक्षक परामर्शदाता विद्यार्थी का सहयोग लेकर कार्य करता है। वे सूचनाओं के महत्व व उपयोगिता के विषय में विचार करते हैं। कुछ सूचनाएँ अस्वीकृत हो जाती हैं और कुछ का अनुवर्तन करते हैं।
2. **विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाने में सहायक** – शिक्षक परामर्शदाता का प्रमुख लक्ष्य है – विद्यार्थियों के अधिगम को परिष्कृत करके उसके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाने में सहायता प्रदान करना। विद्यार्थी को स्वयं अपनी अभिरूचियों, योग्यताओं एवं विशेषताओं के विषय में जानने की जिज्ञासा रहती है। उन्हें यह भी जानना चाहिए कि व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार के लिए ज्ञान का क्या उपयोग है।
3. **विद्यार्थियों के व्यवहार में सुधार लाने में सहायक** – विद्यार्थियों में सीखने के माध्यम से उनके व्यवहार में सुधार लाना परामर्शदाता का कार्य है। इस दृष्टिकोण से परामर्शदाता एक शिक्षक के रूप में अपने कर्तव्य का निर्वाह करता है। प्रभावशाली परामर्श और प्रभावपूर्ण शिक्षण कार्य, अध्यापक और छात्र के व्यक्तिगत संबंधों, कार्य, व्यवहार पर आधारित होता है। विषयवस्तु एवं प्रक्रिया दोनों ही परामर्श को प्रभावपूर्ण बनाने में सहायता करते हैं।
4. **विद्यार्थी को सामाजिक वातावरण के विषय में सूचना देना** – परामर्शदाता का प्रमुख लक्ष्य है विद्यार्थी को समाज के साथ वातावरण में ढालना। शिक्षक परामर्शदाता सामाजिक वातावरण से संबंधित सभी सूचनाओं को एकत्र करता है, यथा नौकरियां,

आर्थिक साधनों, विद्यालयों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, प्रगति की दिशाओं, नागरिक उत्तरदायित्वों आदि के विषय से इन सूचनाओं में समाज में हो रहे नवीनीकरण सामाजिक मूल्य परिवर्तनों की जानकारी भी सम्मिलित होती है।

5. **निर्णय प्रक्रिया के विषय में सूचना प्रदान करना** – परामर्शदाता की कार्य पद्धति के अंतर्गत प्रार्थी को निर्णय प्रक्रिया के विषय में सूचित करना भी है। वह सेवार्थी के साथ मिलकर अन्य निर्णयों की समीक्षा भी करता है, जो विद्यार्थी द्वारा लिए गये निर्णय होते हैं। परामर्शदाता विद्यार्थी को गलत निर्णय के विषय में आगाह करता है।
6. **परामर्शदाता सलाहकार के रूप में** – परामर्शदाता एक उत्तम सलाहकार के रूप में कार्य करता है। वह विद्यार्थी को उत्तम निर्णय लेने अनुमानित निर्णय लेने, सूचनाओं को प्राप्त करने के विषय में तथा अन्य किसी मदों से संबंधित विषयों पर सलाह देता है तथा उचित निर्णय लेने के लिए प्रेरित करता है।
7. **अन्य लोगों के साथ वार्तालाप** – परामर्शदाता विद्यार्थी से संबंधित जानकारी हासिल करने के लिए विषयों के अतिरिक्त अन्य लोगों से भी गोपनीय ढंग से वार्तालाप कर सकता है। यह बातचीत परामर्श की ही प्रक्रिया होगी। परामर्शदाता विद्यार्थी के मित्रों, माता-पिता, रिश्तेदार, शिक्षकों आदि से विचार-विमर्श करता है। यह गोपनीय विचार-विमर्श इस उद्देश्य से किया जाता है ताकि विद्यार्थी की समस्या का समाधान प्रभावपूर्ण ढंग से किया जा सके।
8. **मानवीय या मानक आंकड़ें एकत्रित करना** – मानवीय या मानक आंकड़ों को इकट्ठा करना भी परामर्शदाता का एक प्रमुख कार्य है। किसी भी परीक्षण के प्राप्तांक निरर्थक है, जब तक कि हम उसका तुलनात्मक अध्ययन उसी से समानता रखने वाले प्राप्तांकों से न करें। अधिकतर बहुत से परीक्षणों के लिए मानक उपलब्ध हैं। उनका किस प्रकार उपयोग करना है यह परीक्षणदाता के ऊपर निर्भर करता है। लेकिन कई बार ऐसा भी होता है कि मानक उपलब्ध नहीं होते हैं। यह परामर्शदाता को ही तय करना है कि उन्हें किस प्रकार प्राप्त करें। परामर्शदाता को केवल परीक्षण मूल्यांकन के लिए मानवीय आंकड़े नहीं चाहिए वरन् व्यवहारिक सूचकों के परीक्षण के लिए भी आवश्यक है।

3.6 अधिगम क्रियाकलाप

यदि कोई छात्र कक्षा में उचित रूप से समायोजित नहीं हो पा रहा है तो उसकी इस समस्या के निराकरण के लिए आप किस प्रकार परामर्शदाता की भूमिका का निर्वहन करेंगे

बोध प्रश्न

टिपण्णी क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[1) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये.

6. एक शिक्षक परामर्शदाता की मुख्य आंतरिक दक्षताएं कौन सी हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.7 चिंतनशील व्यवसायी के रूप में शिक्षक

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है, जो राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक नई पीढ़ी को सामाजिक वातावरण में सम्पन्न जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार करता है। शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह प्रभावी शिक्षण देंगे, किन्तु उनके समक्ष यह प्रश्न होता है कि क्या पढ़ाया जाए और किसलिए पढ़ाया जाए ? किएलिए का उत्तर है, धन कमाने के लिए, जिससे वह जीविकोपार्जन करते हुए समाज, समुदाय एवं राष्ट्र विकास में अहम् भूमिका निभा सकें। शिक्षकों की सामाजिक तथा व्यक्तिगत प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के कारण उन्हें वृत्तिक और शिक्षण को वृत्ति कहते हैं। अतः शिक्षक एक चिंतनशील व्यवसायी है। शिक्षक का परम्परागत कार्य तो प्राचीन सांस्कृतिक

परम्पराओं को नई पीढ़ी को सौंपना ही रहा है लेकिन भारत में सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख अभिकर्ता के रूप में शिक्षक की अवधारणा नई है। शिक्षक के लिए यह सोचना आवश्यक है कि वर्तमान भारतीय समाज की आवश्यकताओं और विशेषताओं के संदर्भ में वह किस प्रकार अपने शिक्षण कार्य को समाज के लिए उपयोगी और सार्थक बना सकता है।

शिक्षण व्यवसाय के समाजशास्त्र का क्षेत्र निम्न चार प्रमुख पक्षों से मिलकर बनता है :-

1. **एक व्यवसाय के रूप में शिक्षण** – इस क्षेत्र को तीन प्रमुख उपक्षेत्रों में विभक्त किया जा सकता है –

- अ) शिक्षकों के व्यावसायिक संगठन
- ब) शिक्षकों की व्यावसायिक तैयारी
- स) कक्षा-शिक्षण का समाजशास्त्र

2. **शिक्षकों की पृष्ठभूमि और सामाजिक व मनोवैज्ञानिक विशेषता** – इस क्षेत्र में शिक्षकों की सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि, उनकी व्यक्तिगत सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक शिक्षणता, अपने कार्य के प्रति उनकी प्रेरणा अथवा रुचि, उनकी गति के प्रतिमान आदि कारक सम्मिलित हो सकते हैं।

तृतीय क्षेत्र में शिक्षकों की व्यक्तिगत व सामाजिक कठिनाइयों, विषमताओं तथा अन्य परिस्थितियों को सम्मिलित किया जा सकता है। समाज में शिक्षक का स्थान अथवा सम्मान तथा उसकी अवस्था में सुधार से संबंधित सभी पक्षों को इस क्षेत्र के अंतर्गत लाया जा सकता है। चिंतनशील व्यवसायी के रूप में आवश्यक है कि शिक्षक सामाजिक परिवर्तन के अग्रगण्य बनें। अधिकांश शिक्षक प्रायः सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार करने में झिझकते हैं। वे परम्परागत जीवन क्रम को ही बनाये रखने में विशेष रुचि रखते हैं। यह अवश्य सही है कि हमारे शिक्षकों ने प्रजातंत्र, धर्म-निरपेक्षता, समानता तथा राष्ट्रीयता के सिद्धांतों का स्वागत किया है तथा वे इनको विद्यार्थियों में प्रसारित करने का प्रयास भी करते हैं। तथापि कतिपय प्राचीन संस्कारों व पोषित अध्यापकों के व्यवहार में सामाजिक असमानता, वर्गभेद तथा धार्मिक विद्वेष का आभास अवश्य दृष्टिगोचर होता है। अतः उनकी कथनी व करनी में समन्वय नहीं हो पाता। इस प्रवृत्ति को यथासंभव दूर करने का प्रयास शिक्षकों को करना चाहिए।

शिक्षकों को सामाजिक, राजनैतिक व नवीन यांत्रिक गतिविधियों तथा परिवर्तन की जानकारी से पूर्णतः अवगत होते रहना चाहिए। शिक्षकों को दैनिक समाचार-पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं तथा नवीन विचारों से परिपूर्ण साहित्य का अध्ययन करते रहना चाहिए। शिक्षकों को आधुनिक सामाजिक परिवर्तनों व आंदोलनों का पर्याप्त ज्ञान होना भी आवश्यक है। सामाजिक परिवर्तनों के प्रति शिक्षकों की इस वस्तुस्थिति से अवगत होकर ही शिक्षक एक

आधुनिक दृष्टि—सम्पन्न व्यक्ति तथा उच्च स्तर के बुद्धिजीवी बन सकते हैं। शिक्षक को स्वयं सामाजिक स्थिरता में नहीं, गतिशीलता में विश्वास रखना चाहिए।

शिक्षक सफलतापूर्वक कार्य संपादन कर सकें, इसके लिए इनमें कुछ गुणों का होना आवश्यक है। सर्वप्रथम उनका प्रशिक्षण और योग्यता उत्तम स्तर की होनी चाहिए। उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली होना चाहिए। उनके मन में व्यावसायिक मूल्यों के प्रति अत्यधिक श्रद्धा होनी चाहिए। उनमें सामाजिक समानता, स्वतंत्रता, न्याय आदि सामाजिक मूल्यों के प्रति पूर्ण आस्था होनी चाहिए। उनकी स्वतंत्रता की भावना को सबसे अधिक सम्मान मिलना चाहिए।

प्रत्येक शिक्षण संस्था की व्यवस्था इस प्रकार की होनी चाहिए कि उससे शिक्षक को अपना कार्य कुशलतापूर्वक करने में सहायता मिले। प्रशासनिक उसके उत्साह और कुशलता को कुण्ठित कर देते हैं। आर्थिक कठिनाईयें उसके व्यावसायिक विकास के मार्ग में बाधाएँ प्रस्तुत करती हैं। राजनैतिक हस्तक्षेप के कारण शिक्षा—व्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ता है। शिक्षण संस्था के पारस्परिक संबंधों का भी शिक्षा—व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है। अतः भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षक का कार्य एक गंभीर तथा महत्वपूर्ण चुनौती है। शिक्षक को प्रशासकों की ओर से अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए, जिससे उसकी क्रियात्मकता व प्रारम्भिक शक्ति का सर्वांगीण विकास हो सके। शाला के वातावरण में उसे अपना कार्य करने की पूरी सुविधा मिलनी चाहिए। पाठ्यक्रम के निर्माण में उसका योग हो। प्रायः शिक्षक उपलब्ध सुविधाओं व अवसरों का लाभ नहीं उठाते। शिक्षकों में और अधिक विश्वास किया जाना चाहिए। उनकी स्वाधीनता व योग्यता का समाज के सभी वर्गों, विशेषकर शिक्षा प्रशासनाधिकारियों द्वारा सम्मान होना चाहिए। कई शिक्षा विभागों में अभी तक कई पुराने दकियानूसी नियम और व्यवस्थाएँ प्रचलित हैं। इनमें से कई व्यवस्थाएँ शिक्षक के प्रति अविश्वास और असम्मान की भावना पर आधारित हैं। जब तक शैक्षिक प्रशासन में जनतंत्र की व्यवस्था विकसित नहीं की जाती, तब तक शिक्षक स्वतंत्रता और प्रसन्नतापूर्वक अपना कार्य करने में समर्थ नहीं होंगे। इस प्रकार देखा जाए तो शिक्षण कार्य कोई सरल कार्य नहीं है। इसके लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। शिक्षक में कुछ गुण जन्मजात होते हैं। परंतु अनेक अन्य गुणों के लिए उसे प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। जहाँ तक जन्मजात गुणों का प्रश्न है उनको भी कार्यरूप में परिणित करने का शिक्षक को पर्याप्त अवसर मिलता है और इन कुशलताओं का शैक्षणिक परिवेश में उचित रूप से विकास होते रहना चाहिए।

3.7.1 शिक्षकों की प्रतिबद्धता के क्षेत्र

एक शिक्षक का काम इतना आसान नहीं है। जब तक उसके व्यक्तित्व में उच्चकोटि के व्यावसायिक गुणों एवं प्रतिबद्धता का समावेश नहीं किया जाता, तब तक उसका व्यक्तित्व

वास्तव में अधूरा ही रहेगा। सफल शिक्षक, शिक्षक की सामर्थ्य और उसके कार्य-निष्पादन के सम्बन्ध में किए गए विभिन्न अध्ययनों में भी उसकी प्रतिबद्धता से जुड़ी अनेक विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। एन.सी.टी.ई., दिल्ली द्वारा विभिन्न स्तरों पर आयोजित की गई परिचर्चाओं में प्रतिबद्धता के पाँच प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की गई है, जो कि निम्नलिखित हैं –

1) विद्यार्थी के प्रति प्रतिबद्धता

- विद्यार्थी के प्रति प्रेम व सद्भावना, उसकी सहायता व सहयोग करना, तथा
- बालकों का बहुमुखी विकास करना

2) समाज के प्रति प्रतिबद्धता

- अध्यापक द्वारा परिवार, समाज, समुदाय और देश के विकास में योगदान देना तथा जागरूकता उत्पन्न करना।

3) व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता

- शिक्षण व्यवसाय को स्वीकार करना, तथा
- अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठावान एवं ईमानदार रहना भले ही उसने इस व्यवसाय का चयन किसी भी परिस्थिति में किया हो।

4) श्रेष्ठता हासिल करने की प्रतिबद्धता

- कक्षा, विद्यालय और समुदाय के प्रत्येक कार्य को यथासम्भव लगन एवं सर्वोत्तम ढंग से करना तथा श्रेष्ठता प्राप्त करना।

5) बुनियादी मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता

- प्रेम, नियमितता, निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता, ईमानदारी, देशप्रेम आदि उन्नत मूल्यों को जीवन में उतारकर एक उत्कृष्ट तथा आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करना।

इस प्रकार उत्तम ढंग से प्रशिक्षित व प्रभावशाली शिक्षक उन्हें ही माना जा सकता है, जो कि योग्य होने के साथ-साथ प्रतिबद्ध एवं व्यावसायिक ढंग से शिक्षण कार्य करते हैं। अतः शिक्षकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता पैदा करना शिक्षक-प्रशिक्षण और अध्यापक – शिक्षा का एक अनिवार्य अंग होना चाहिए। इसी उद्देश्य से शिक्षकों के शिक्षण पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के लिए उपरोक्त प्रतिबद्धता क्षेत्रों को चिन्हित किया गया है।

3.7.2 शिक्षकों की दक्षता के विभिन्न क्षेत्र

शिक्षकों को अपने कार्य-प्रदर्शन के विभिन्न क्षेत्रों में उत्तम प्रदर्शन करने तथा उत्तरदायित्वों की दक्षता (कुशलता) और समझदारी से निर्वाह करने के लिए वर्तमान पाठ्यक्रम में परिवर्तन करना होगा। इन परिवर्तनों के सन्दर्भ में एन.सी.टी.ई. के दस्तावेज, गुणात्मक विद्यालय शिक्षा हेतु दक्षता आधारित व प्रतिबद्धता उन्मुख अध्यापक शिक्षा सेवाकालीन शिक्षा के निम्न दस 'दक्षता क्षेत्रों' का उल्लेख किया गया है :-

1. सान्दर्भिक या प्रासंगिक योग्यताएँ
2. अवधारणात्मक या धारणात्मक योग्यताएँ
3. पाठ्यक्रम व पाठ्य सामग्री विषयक योग्यताएँ
4. कार्य निष्पादन विषयक योग्यताएँ
5. अन्य शैक्षणिक गतिविधियों से संबंधित योग्यताएँ
6. शिक्षण-सामग्री विकसित करने की योग्यताएँ
7. मूल्यांकन की योग्यताएँ
8. प्रबंधन योग्यताएँ
9. अभिभावकों से संपर्क तथा सहयोग संबंधी योग्यताएँ
10. समुदाय से संपर्क व सहयोग संबंधी योग्यताएँ

3.7 अधिगम कार्यकलाप

एक चिंतनशील व्यवसायी के रूप में शिक्षक की संवृत्तिक कौशलों की चिकित्सक व अन्य सामाजिक व्यवसायियों के कौशलों से तुलना कीजिये.

बोध प्रश्न

टिपण्णी क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[1) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये.

7. शिक्षकों के प्रतिबद्धता के मुख्य क्षेत्र कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.8 सारांश

इस इकाई में हमने शिक्षण की जटिल प्रक्रिया के साथ-साथ समुदाय के विस्तारित संदर्भ में भी शिक्षक की विभिन्न भूमिकाओं पर चर्चा की है। प्रत्येक शिक्षक का मूल उद्देश्य छात्रों को शिक्षा प्रदान करना होता है। साथ ही शिक्षा का उद्देश्य छात्र का अधिकतम सर्वांगीण विकास करना है। अतः इस व्यापक उद्देश्य की प्राप्ति में शिक्षक विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहण करता है। जब वह तथ्यों, नियमों व सूचनाओं का आदान-प्रदान करता है तो कक्षा में उसकी भूमिका ज्ञानप्रदाता के रूप में होती है। जब वह किसी अधिगम प्रक्रिया का संवर्धन करता है व उन्हें सीखाने में सहायता करता है, तब वह सुविधाप्रदाता की भूमिका में कार्य कर रहा होता है। छात्रों को उनके वातावरण व समाज से अवगत कराने व छात्रों के अंदर व्याप्त अज्ञान के अंधकार को दूर करके उन्हें प्रगति की राह दिखाने में करता है। अतः सामाजिक परिवर्तन में शिक्षक की सक्रिय भूमिका है तथा वह एक चिंतनशील व्यवसायी के रूप में भी अपनी भूमिका का पूरी कुशलता से निर्वहन करता है। शिक्षक की नितांत भिन्न और महत्वपूर्ण भूमिका है परामर्शदाता के रूप में। जब कभी विद्यार्थी के समक्ष कोई समस्या आती है, चाहे व्यक्तिगत हो या सामाजिक, शैक्षिक या मनोवैज्ञानिक, उसके समाधान के लिए शिक्षक उचित उपायों व अनुक्रियाओं को अपनाने में विद्यार्थी की सहायता करता है। इस प्रकार शिक्षक शैक्षणिक परिवेश में विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन कुशलता से करता है।

3.9 प्रगति की जांच

1. ज्ञान के समुचित हस्तांतरण के लिए शिक्षक निम्न विधियों का प्रयोग कर सकता है-

- सक्रिय शिक्षा विधि
- प्रश्नोत्तर विधि
- व्याख्यान विधि
- निगमन विधि
- आगमन विधि

2. आगमन शिक्षण में तार्किक चिंतन द्वारा तथ्यों के अंतर्गत संबंधों को ज्ञात करके उनके वर्गीकरण से सामान्यीकरण करते हैं। जिससे उन संबंधों की व्याख्या होती है। आगमन चिंतन से शिक्षक छात्रों को सिद्धांतों तथा अधिनियमों का उपयोग सिखाता है।

.3 सुविधाप्रदाता की

.4 सुविधाप्रदाता की भूमिका में शिक्षक में निम्न विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं

- प्रभावी श्रोता
- उदारता
- व्यापक समझ
- छात्रों के व्यक्तित्व के प्रतिसम्मान
- बुद्धिमत्ता
- पारस्परिक संचार कौशल में निपुणता

5. सामाजिक परिवर्तन निम्न प्रकार के होते हैं-

- (1) विकासात्मक,
- (2) लहरदार,
- (3) चक्रिय क्रम

6. शिक्षक की आंतरिक दक्षताएँ

- (1) अवलोकन, (2) सुनना, (3) संवेदना, (4) तटस्थ मूल्यांकन और निर्णय लेना,
- (5) विभेदन, (6) आत्म प्रत्यावर्तन, (7) विद्यार्थी के अनुभव का ज्ञान, (8) चुनौती देने की अभिवृत्ति का आत्मबोध, (9) सिद्धांतों की जांच परख करना, (10) प्रत्यावर्तन एवं अभिलेखन

7 . अध्यापकों की प्रतिबद्धता के क्षेत्र

- 1) विद्यार्थी के प्रति प्रतिबद्धता
- 2) समाज के प्रति प्रतिबद्धता
- 3) व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता
- 4) श्रेष्ठता हासिल करने की प्रतिबद्धता
- 5) बुनियादी मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता

3.10 सन्दर्भ सूचि

Chris Forlin (2010): Teacher Education Reform for Enhancing Teachers' Preparedness for Inclusion. *International Journal of Inclusive Education*, Volume 14, Issue 7

NCTE, National Curriculum for Teacher Education: A Framework (1988), New Delhi: NCERT.

Udayveer (2006) : Modern Teacher Training, Anmol Publications, New Delhi.

Walia, K. (1992). Secondary teacher education programs in northern India: An evaluation study. Fifth Survey of Educational Research, 1988-92, New Delhi:NCERT.

Wootfolk Anita 2008 Education Psychology Delhi: Person Education, Inc